IJAER/ November-December 2024/Volume-13/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

राजा नाहर सिंह की वीरता का एक ऐतिहासिक अध्ययन

Shakir Husain (Assistant Professor)
Subject History (Vidhiya Shambal Yojna)
M.A.J College Deeg Rajasthan

सारांश, सन् 1857 ई0 में भारतीय स्वतंत्रता प्राप्त के लिए हुए शहीदों में बल्लभगढ़ के जाट राजा नाहर सिंह का नाम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बल्लभगढ़ का यह छोटा सा राज्य दिल्ली से केवल 20 मील दूर है यहाँ के नवयुवक राजा नाहर सिंह की यह दूरदर्शिता ही थी कि उसने बढ़ते हुए अंग्रेजों के खतरे का सामना करने की दृष्टि से, मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर से मित्रता कर ली। मुगल सम्राट भी इसको अपना दाहिना बाजू मानता था। मित्रता के साथ ही, लड़खड़ाते मुगल साम्राज्य का बहुत–उत्तरदायित्व भी, राजा नाहर सिंह ने अपने कन्धों पर सम्भाला। परिणामतः दिल्ली नगर की सुरक्षा एवं सुव्यवस्था की बागडोर मुगल सम्राट ने राजा को दी। राजा नाहर सिंह की सेना दिल्ली की पूर्वी सीमा पर तैनात हुई। उन्होंने दिल्ली से बल्लभगढ़ तक सैनिक चौकियाँ तथा गुप्तचरों के दल नियुक्त कर दिए। उनकी इस तैयारी से भयभीत होकर सर जॉन लारेन्स ने पूर्व की ओर से दिल्ली पर आक्रमण करना स्थगित कर दिया। अंग्रेज बल्लभगढ़ को दिल्ली का 'पूर्वी लोहद्वार' मानकर भयभीत थे और राजा नाहर सिंह से युद्ध करने का साहस छोड़ बैठे थे

मुख्य शब्द, राजा नाहर सिंह गोरी, पलट बल्लभगढ़ का किला

प्रस्तावना, लार्ड केनिंग को लिखे एक पत्र में सर जॉन लारेन्स ने लिखा था कि ''पूर्व और दक्षिण में बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह की मजबूत मोर्चाबन्दी है और उस सैनिक दीवार को तोड़ा जाना असम्भव ही दिखाई पड़ता है।[1] जब तक कि चीन अथवा इंग्लैण्ड से हमारी कुमक नहीं आ जाती। 14 सितम्बर को जब अंग्रेज सेनाओं ने दिल्ली पर आक्रमण किया तबवह पश्चिम की ओर से कश्मीरी दरवाजे से ही दिल्ली में प्रवेश कर सकी। 24 सितम्बर को दिल्ली पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। सम्राट को भी लाल किला छोड़कर हुमायूं के मकबरे में शरण लेनी पड़ी। उस समय राजा नाहर सिंह ने सम्राट को बल्लभगढ़ चलने का आग्रह किया किन्तु सम्राट के समधी मिर्जा इलाही बख्श, जो अंग्रेजों का एजेन्ट के बहकाने में सम्राट ने हुमायूं के मकबरे से आगे बढ़ना अस्वीकार कर दिया।[2] 24 सितम्बर को कप्तान हडसन ने सम्राट और शहजादों को वही कैद कर लिया, फिर भी राजा ने वीरता दिखाई और अंग्रेजी फौज को ही घेरे में डाल दिया। हडसन ने शहजादों को गोली से मार दिया। अतः राजा ने सम्राट की प्राणरक्षा की दृष्टि से घेराबन्दी उठा ली। साहसी वीर नाहर सिंह ने रातो–रात पीछे हटकर, बल्लभगढ़ के किले में घुसकर नया मोर्चा लगाया और आगरे की ओर से दिल्ली की तरफ बढने वाली गोरी पलट की धज्जियाँ उड़ायी जाने लगी। हजारों गोरे बन्दी बना लिए गए और अनगिनत बल्लभगढ़ मैनोंदान में धराशयी हुए। सम्राट के शहजादों का बदला बल्लभगढ़ में लिया गया। चालक अंग्रेजों ने धोखेबाजी से काम लिया और रणक्षेत्र से सन्धिसूचक सफेद झण्डा दिखा। अंग्रेज अफसर हैण्डरसन ने वार्तालाप के बहाने बुलाकर राजा नाहर सिंह व उनके सेनापति गुलाब सिंह को गिरफ्तार कर लिया।

चार घुड़सवार अफसर दिल्ली से बल्लभगढ़ पहुंचे और राजा से निवेदन किया कि सम्राट बहादुर शाह से सन्धि होने वाली है, उसमें आपका उपस्थित होना आवश्यक है।[3] राजा नाहर सिंह व उसके साथियों पर 9 जनवरी सन् 1858 को इनके प्रिय व महान् योद्धा सेनापति गुलाब सिंह, साथी भूरासिंह व खुशाल सिंह को दिल्ली में प्रवेश करते ही छिपी हुई गोरी पलटन ने अचानक बन्दी बना लिया। उसके वीर सैनिकों को मार–काट दिया गया। उस दिन (21 अप्रैल 1858 ई0) को बल्लभगढ़ के यह चार नौनिहाल देशभक्ति के अपराध में साथ–साथ फाँसी के तख्ते पर खड़े हुए इस प्रकार देशभक्त वीर राजा नाहर सिंह निःस्वार्थ भाव से देश की बलिवेदी पर चढ़कर अमर हो गये उनका पार्थिव शरीर भी उनके परिवार को नहीं दिया गया।[4] अतः उनके राजपुरोहित ने राजा का पुतला बनाकर गंगा किनारे अन्तिम संस्कार की रस्म पूरी की।[5] बाबा शाहमल जाट तोमर बागपत जिले में बिजरौल गांव के एक साधारण परन्तु आजादी के दिवाने क्रांतिकारी किसान थे। वह मेरठ और दिल्ली समेत आप–पास के इलाके में बेहद लोकप्रिय थे। मेरठ जिले के समस्त पश्चिमी और उत्तर पश्चिमी भाग में अंग्रेजों के लिए भारी खतरा उत्पन्न करने वाले बाबा शाहमल ऐसे ही क्रांतिदूत थे। गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए इस महान व्यक्ति ने लम्बे अरसे तक अंग्रेजों को चैन से नहीं सोने दिया था। अंग्रेज हुकुमत से पहले यहाँ बेगम समरू राज्य करती थी बेगम के राजस्व मंत्री ने यहाँ के किसानों के साथ बड़ा अन्याय किया यह क्षेत्र 1836 में अंग्रेजों के अधीन आ गया अंग्रेज अधिकारी प्लाउड ने जमीन का बन्दोबस्त करते समय किसानों के साथ हुए अत्याचार को कुछ सुधारा परन्तु मालगुजारी देना बढ़ा दिया पैदावार अच्छी थी। जाट किसान मेहनती थे सो बढ़ी हुई मालगुजारी भी देकर खेती करते रहे खेती के बन्दोबस्त और बढ़ी मालगुजारी से किसानों में भारी असंतोष था जिसने 1857 की क्रांति के समय आग में घी का काम किया।[6] शाहमल का गाँव बिजरौल काफी बड़ा गाँव था 1857 की क्रान्ति के समय इस गाँव में दो पट्टियाँ थी उस समय शाहमल एक पट्टी का नेतृत्व करते थे बिजरौल में उसके भागीदार थे चौधरी शीश राम और अन्य जिन्होंने शाहमल की क्रान्तिकारी कार्यवाहियों का साथ नहीं दिया। शाहमल की क्रान्ति प्रारम्भ में स्थानीय स्तर की थी परन्तु समय पाकर विस्तार पकड़ती गई आस–पास के लम्बरदार विशेष तौर पर बड़ौत के लम्बरदार शौन सिंह और बुधसिंह और जौहरी, जफर्वाद और जोट के लम्बरदार बदन और गुलाम भी विद्रोही सेना में अपनी–अपनी जगह पर आ जामें। शाहमल के मुख्य सिपहसलार बगता और सज्जा थे और जाटों के दो बड़े गाँव बाबली और बड़ौत अपनी जनसंख्या और रसद की तादाद के सहारे शाहमल के केन्द्र बन गए।[7] 10 मई 1857को मेरठ से शुरू विद्रोह की लपटे इस इलाके में फैल गई शाहमल ने जहानपुर के गूजरों को साथ लेकर बड़ौत तहसील पर चढ़ाई कर दी। उन्होंने तहसील के खजाने को लूटकर उसकी अमानत को बर्बाद कर दिया। बंजारा सौदागरों की लूट से खेती की उपज की कमी को पूरा कर लिया। मई और जून में आस–पास के गाँवों में उनकी धाक जम गई। फिर मेरठ से छूटे हुये कैदियों ने उनकी फौज को और बढ़ा दिया। उनके प्रभुत्व और नेतृत्व को देखकर दिल्ली दरबार में उसे सूबेदारी दी। 12 व 13 मई 1857 को बाबा शाहमल ने सर्वप्रथम साथियों समेत बंजारा व्यापारियों पर आक्रमण कर काफी सम्पत्ति कब्जे में ले ली और बड़ौत तहसील और पुलिस चौकी पर हमला करने बाले की तोड़फोड़ व लूटपाट की। दिल्ली के क्रान्तिाकरियों की उन्होंने बड़ी मदद की।[8] क्रान्ति के प्रति अगाध प्रेम और समर्पण की भावना ने जल्दी ही उनको क्रान्तिवीरों का सूबेदार बना दिया। शाहमल ने बिलोचपुरा के एक बलूची नवी बख्श के पुत्र अल्ला दिया को अपना दूत बनाकर दिल्ली भेजा ताकि अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ने के लिए मदद व सैनिक मिल सके बागपत के थानेदार वजीर खाँ ने भी इसी उद्देश्य से

सम्राट बहादुरशाह को अर्जी भेजी। बागपत के नूर खाँ के पुत्र मेहताब खां से भी उनका सम्पर्क था। इन सभी ने शाहमल को बादशाह के सामने पेश करते हुए कहा कि वह क्रान्तिकारियों के लिए बहुत सहायक हो सकते है और ऐसा ही हुआ शाहमल ने न केवल अंग्रेजों के संचार साधनों को ठप किया बल्कि अपने इलाके को दिल्ली के क्रान्तिवीरों के लिए आपूर्ति क्षेत्र में बदल दिया। अपनी बढ़ती फौज की ताकत से उन्होंने बागपत के नजदीक जमुना पर बने पुल को नष्ट कर दिया, उनकी इन सफलताओं से उन्हें 84 गाँवों का आधिपत्य मिल गया। उसे आज तक देश खाप की चौरापी कह कर पुकारा जाता है। वह एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में संगठित कर लिया गया और इस प्रकार वह जमुना के बाएं किनारे का राजा बन बैठा। जिससे कि दिल्ली की उभरती फौजों को रसद जाना कतई बन्द हो गया और मेरठ के क्रान्तिकारियों को मदद पहुँचती रही, इस प्रकार वह एक छोटे किसान से बड़े क्षेत्र के अधिपति बन गए। इलियट ने 1830 में लिखा है कि पगड़ी बांधने की प्रथा व्यक्ति को आदर देने की प्रथा ही नहीं थी, बल्कि उन्हें नेतृत्व प्रदान करने की संज्ञा भी थी। शाहमल ने इस प्रथा का पूरा उपयोग किया। शाहमल बसौड़ गाँव से भाग कर निकलने के बाद वह गांवों में गया और करीब 50 गांवों की नई फौज बनाकर मैदान में उतर पड़ा। दिल्ली दरबार और शाहमल की आपस में उल्लेखित सन्धि थी। अंग्रेजों ने समझ लिया कि दिल्ली की मुगल सत्ता को बर्बाद करना है तो शाहमल की शक्ति को दुरूस्त करना आवश्यक है, उन्होंने शाहमल को जिन्दा या मुर्दा उसका सिर काट कर लाने वाले के लिए 10000 रूपये इनाम घोषित किया जो कि अंग्रेजी फौज का नेतृत्व कर रहा था, को शाहमल की फौजों के सामने से भागना पड़ा इसने अपनी डायरी में लिखा हैं''चारों तरफ से उभरते हुये जाट नगाड़े बजाते हुये चले जा रहे थे और उस आंधी के सामने अंग्रेजी फौजों का जिसे खाकी रिसाला' कहा जाता था, काटिकना नामुमकिन था।'' एक सैन्य अधिकारी ने उनके बारे में लिखा है कि– ''एक जाट (शाहमल) ने जो बड़ौत परगने का गवर्नर हो गया था और जिसने राजा की पदवी धारण कर ली थी, उसने तीन–चार अन्य परगनों नियंत्रण कर लिया था। दिल्ली के घेरे के समय जनता और दिल्ली इसी व्यक्ति के कारण जीवित रह सकी।' इसीलिये भारतीय इतिहास में इसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। सन् 1885 ई0 में कांग्रेस के जन्म से पूर्व भारतवासियों का कोई राजनैतिक संगठन नहीं था। राष्ट्रीय आन्दोलन को जन्म देने की प्रबल इच्छा अभी तक पैदा नहीं हुई थी। कोई भी व्यक्ति स्वराज्य तथा लोकप्रिय शासन की स्थापना करने का विचार भी नहीं करता था। अंग्रेज सरकार अत्याचार कर रही थी परन्तु उसके विरूद्ध आवाज उठाने की शक्ति किसी में नहीं थी। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे राजा राम मोहनराय तथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के समाज सुधार कार्यों को और अधिक व्यापक बनाया गया। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लोगों में स्वतंत्रता, देशप्रेम तथा भारतीय वस्तुओं के प्रति प्रेम का संचार किया। वह ही प्रथम भारतीय थे जिन्होंने यह नारा लगाया कि 'भारतवर्ष भारतवासियों के लिए है।' उत्तर भारत में लोगों के हृदयों में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने में आर्यसमाज का महत्वपूर्ण योगदान है, आन्दोलन ने आगामी स्वाधीनता संघर्ष में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन स्वाधीनता–संघर्षों में जाटों का बड़ा योगदान रहा। आर्य समाज के जाट नेताओं में स्वामी स्वतंत्रता नन्द जी, महात्मा भक्त फूलसिंह जी, श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती जी, आचार्य भगवानदेव (स्वामी ओमानन्द जी) अति प्रसिद्ध हुए है। इन नेताओं ने उत्तरी भारत में प्रचार करके लोगों में देशभक्ति एवं स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना पैदा की। इनके अतिरिक्त जाट वंशज आर्य भजनोउपदेशकों ने जिनमें कवि सम्राट चौ0 ईश्वरसिंह, गहलावत, इनके शिष्य चौ0 नौनन्दसिंह, कुंवर जौहरी सिंह व चौ0 सूरतसिंह और इनके अतिरिक्त चौ0 तेजसिंह तथा चौ0 पृथ्वीसिंह भजनों द्वारा जनता में स्वतंत्रता के लिए जागृत

किया। इस तरह से जाटों ने हर पहलू से देशभक्ति तथा सेवा की है। इनके अतिरिक्त पंडित बस्तीराम जो स्वामी दयानन्द जी के शिष्य एवं भक्त थे, ने अपने भजनों द्वारा भारत की जनता में आर्य समाज को लोकप्रिय बनाया और राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की।

निष्कर्ष 1857 का इतिहास गवाह है कि जाटों ने इस स्वतंत्रता संग्राम में असंख्य बलिदान दिये जिसमें अंग्रेजों ने जाटो के गाँव के गाँव उजाड़ दिये तथा सड़कों पर सरे आम उन पर बुलडोजर चलवाकर या पेड़ों पर फांसी देकर शहीद कर दिया। जाट पुरुष ही नहीं, जाटनियां भी पीछे नहीं रहीं। उत्तर प्रदेश के बड़ौत के पास बिजवाड़ा में एक जाट लड़की धर्मवीरी ने 18 अंग्रेज सैनिकों की गर्दन कलम करके परलोक पहुंचा दिया था। और वह स्वयं लड़ते–लड़ते वीरगति को प्राप्त हुई। इसी प्रकार इसी क्षेत्र में घर में चरखा कातने वाली तीन लड़कियाँ ज्ञानदेवी, सूखवीरी तथा शांति को जब मालूम हुआ कि उनके गाँव में अंग्रेजी सैनिक घुस आये हैं तो वह तीनों लड़कियाँ पड़ोसी खातियों के घरों से कुल्हाड़ी ले आई और गली में कोने पर घात लगाकर बैठ गई। जैसे–जैसे अंग्रेज सैनिक आते गये उनको काटती रही। इस प्रकार उन्होंने कुल 64 सैनिकों पर वार किया जिसमें 36 वहीं मर गये बाकी संगीन रूप से घायल हो गये। फिर छतों पर चढ़कर अंग्रेज सैनिकों ने इन्हें गोलियों से शहीद किया। पूरे गाँव को बाद में अंग्रेजों ने आग लगवादी थी। उस क्षेत्र में आज भी ऐसे अनेक गीत प्रचलित हैं।

'एक कहानी अजब सुनो, सन् अठारह सौ सत्तावन की।
एक लड़की देश खाप में व्याही थी, गठवाला बावन की।।
नाम था धर्मवीरी इसकी उम्र थी अठाईस साल की।

12 अप्रैल 1934 को बोसाणा गांव के डाल सिंह, तेजसिंह, केसरी सिंह, बालू सिंह, जोधाराम, अर्जुन राम नामक जाट किसान खलिहान में काम कर रहे थे। अकस्मात 50 सवारी नें जिनमें नायक बावरी सब लोग हथियार बन्द थे, आकर इनको घेर लिया और इनको गिरफ्तार कर लिया। उसी समय इन जाट सरदारों की स्त्रियाँ उनके लिए भोजन लेकर पहुँची और जब वह भोजन देने लगी तो कर्मचारियों ने सिपाहियों को उन को बेतो से मार कर भाग जाने का हुक्म दिया। फिर क्या थाशिकारी जानवरों की तरह सिपाही बेते लेकर स्त्रियों पर टूट पड़े। इस मारपीट के परिणाम से एक बूढ़ी स्त्री जब बेहोश हो गई तो उसे इन्होंने चोटी पकड़कर घसीटते–घसीटते दूर ले जाकर डाल दिया गिरफ्तार सुधा किसानों ने जब इसका विरोध किया तो उनको भी पीटा गया और फिर उन्हें रस्सों से बांध कर उन्हें सिंगरावट तहसील ले जाया गया। तहसील में ले जाकर उन किसानों के पैर काठ में फंसा उन्हें औधे मुंहजमीन में डाल दिया गया। इस शोध पत्र में उल्लेख में जाट वीरो का विस्तार से उल्लेख मेरे द्वारा किया गया है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ठाकुर देशराज, जाट इतिहास, 1934 ई0,ख पृ0 610
2. डॉ. पेमाराम : शैखावटी किसान आन्दोलन का इतिहास, पृ. 170–173
3. सरकारी आदेश नं. 397 एस.पी. दिनांक 11 दिसम्बर 1942 ई., जयपुर गजट, असाधारण, 11 दिसम्बर 1942 ई.
4. जयपुर ज्यूडिसियल रिकोर्ड, फाइल नं. ज–2–7483, भाग–9, प्र. 19, रा.रा.अ. बीकानेर

5. कुं. नेतराम सिंह के संस्मरण, हस्तलिखित, पृ. 175–176
6. 31 अक्टूबर 1935 की मीटिंग की कार्यवाही, जयपुर रेवेन्यू रिकोर्ड, आर–6 जागीर, फाइल नं. 1678, रा.रा.अ. बीकानेर
7. कुं. नेतराम सिंह के संस्मरण, हस्तलिखित, पृ. 144–146
8. डॉ. पेमाराम : शेखावाटी किसान आन्दोलन का इतिहास, पृ. 136–1